अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

बुद्धकालीन दार्शनिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन

बालाजी पोटभरे[1] , रितिका मिश्रा[2], कृष्ण कुमार सिंह[3],

सारांश :
मनुष्य का जीवन बहुत ही दुर्लभ माना गया है| कुदरत ने मनुष्य को सोचने की शक्ति, बुद्धि/मानस का सबसे कीमती अमूल्य तोहफा दिया है जो अन्य प्राणियों के पास नहीं है | इस मनुष्य के सोचने की प्रवृत्ति से ही जिज्ञासा वश वह सदियों से यह जानने की कोशिश में रहता है कि, आखिर इस प्रकृति का सार क्या है ? इस मनुष्य जीवन के मायने क्या है? इस ब्रह्मांड की अन्तिम सच्चाई क्या है?सुख-दुःख की संकल्पना असल में क्या है?मनुष्य के जानने के इसी स्वाभाविक प्रवृत्ति से दर्शन शास्त्रों का उगम हुआ है | अपने देश में दर्शन के मुख्य दो भेद माने जाते है- आस्तिक और नास्तिक | आयुर्वेद चिकित्साशास्त्र के मौलिक सिद्धान्त भारतीय दर्शन शास्त्रों से लिए गए है |आस्तिक दर्शनों में मुख्यतः सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा है जिनके कर्ता क्रमशः कपिल मुनि, महर्षि पतंजलि, अक्षपाद गौतम, महर्षि कणाद, जैमिनी एवं महर्षि व्यास है | नास्तिक दर्शनों में मुख्यतः चार्वाक, जैन एवं बौद्ध माने जाते है, असल में चार्वाक दर्शन को नास्तिक शिरोमणि कहा जाता है|तथागत बुद्ध के समय प्रसिद्ध छ: दार्शनिक थे, जैसे- अजित केशकम्बल, मक्खलि गोशाल, पूर्णकाश्यप, प्रक्रुधकात्यायन, संजय वेलट्ठिपुत्त, निगंठ नातपुत्त इत्यादी |इन छ: दार्शनिकों के विचार क्या थे, उनके संकल्पनाएँ क्या थी? इस सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत करना यह शोध पत्रिका का उद्देश्य है|

प्रस्तावना :
आयुर्वेद को चिकित्साशास्त्र के साथ साथ एक दर्शन भी माना जाता है।| आयुर्वेद चिकित्साशास्त्र के मौलिक सिद्धान्त भारतीय दर्शन शास्त्रों से लिए गए है, जैसे सांख्य दर्शन से पीलुपाकवाद, परिणामवाद, योगदर्शन से नैष्ठिक चिकित्सा, अष्टांगयोग, न्यायदर्शन से प्रमाण, वैशेषिक दर्शन से पदार्थ, पूर्व मीमांसा से कर्म (कर्मकाण्ड) का सिद्धान्त तथा उत्तर मीमांसा से आत्मा का सिद्धान्त लिया गया है | इसी तरह से चार्वाक दर्शन से स्वभाववाद, जैन दर्शन से अनेकान्तवाद, स्यादवाद और बौद्ध दर्शन से क्षणभंगूरवाद इत्यादि |इस तरह से आयुर्वेद के मुलभुत सिद्धान्त भारतीय दर्शन शास्त्रों पर आधारित है |
"दर्शन' शब्द 'दृश' धातु से बना हैजिसका अर्थ है'जिसके द्वारा देखा जाय' । डॉ.ब्रह्मानंद त्रिपाठी ने चरकसंहिता में स्पष्टता के साथ कहा है"प्राचीन चिकित्सा – साहित्य के अध्ययन के पूर्व जिज्ञासुओं को व्याकरण, षड्दर्शन साहित्य का भली प्रकार अध्ययन – परिशीलन आवश्यक होता है, अन्यथा इन संहिता ग्रंथों के बहुर्थ गुम्फित सूत्रों का सही भावार्थ उपलब्ध नहीं हो पाता।"[1]
बुद्ध के समय के छ: दार्शनिकों के क्या विचार थे? उनके दर्शनों का आयुर्वेद पर कुछ प्रभाव है क्या? उन दार्शनिकों के विचार क्यों लुप्त हो गए ?विज्ञानक युग में यह आवश्यक है कि आयुर्वेद का अध्ययन,अनुसन्धान ऐतिहासिक, पुरातत्वीय, भाषाएँ, दार्शनिक, धार्मिक एवं अध्यात्मिक दृष्टियों से होना चाहिए ।यह जानना जरुरी है कि आयुर्वेद के उत्पत्ति के समय हजारों वर्ष पहले भारत देश में कैसी सामजिक, भौगोलिक परिस्थितियाँ थी, कौन से दार्शनिक सम्प्रदाय थे और उनका किस तरह से एक दूसरे पर प्रभाव था।

1. अनुसन्धान अधिकारी (आयु.), क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान, पटना |
2. अनुसन्धान अधिकारी (आयु.), क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान, पटना |
3. प्रभारी सहायक निदेशक, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान, पटना |

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

बुद्ध के समय के प्रसिद्ध छः दार्शनिकनिम्नलिखित नुसार है|

बुद्ध के समय निम्नलिखित दार्शनिक बहुत प्रसिद्ध थे, इनका उस काल के सभ्य समाजमे बहुत सन्मान था[2]-

1. **भौतिकवादी:-** अजित केशकम्बल, मक्खलि गोशाल
2. **नित्यतावादी:-** पूर्णकाश्यप, प्रक्रुधकात्यायन
3. **अनिश्चिततावादी:-** संजय वेलट्ठिपुत्त, निगंठ नातपुत्त

बौद्ध त्रिपिटक साहित्य दिघनिकाय के सामञ्ञफल-सुत्त में बुद्ध के समकालीन उपरोक्त छः दार्शनिकों के साथ मगधराज, अजातशत्रु वैदेहिपुत्रसे हुई वैचारिक मंथन के स्वरुप में वर्णन निम्नलिखितरूप में मिलता है |

मगधराज, अजातशत्रु वैदेहिपुत्र अपने मन्त्रियों से एक दिन पूछा कि, किस श्रमण या ब्राह्मण का सत्संग करें, जिसका सत्संग उनके चित्तको प्रसन्न कर सके?

एक राजमन्त्रीने मगधराज, अजातशत्रु वैदेहिपुत्रसे कहा कि-"पूर्ण काश्यप संघ-स्वामी-गण-अध्यक्ष, गण-ज्ञानी, यशस्वी, तीर्थंकर (= मतस्थापक) बहुत लोगोंसे सम्मानित, अनुभवी, चिरकालका साधु, वयोवृद्ध है। उसी पूर्ण काश्यप से धर्मचर्चा करें,पूर्ण काश्यप के साथ थोडी ही धर्म-चर्चा करनेसे चित्त प्रसन्न हो जायेगा। एक-एक राजमन्त्री ने क्रमशः मक्खलि गोसाल, अजित केशकम्बल, प्रक्रुध कात्यायन, संजय बेलट्ठिपुत्त,निगण्ठ नाथपुत्त (नातपुत, नाटपुत्त) इन दार्शनिकों के साथ सत्संग करने का सुझाव राजा अजातशत्रु को दिया | अन्त में जीवक कौमारभृत्य ने राजा मागध वैदेहिपुत्र अजातशत्रु को कहा किअर्हत्, सम्यक सम्बुद्ध (= परम ज्ञानी), विद्या और आचरणसे युक्त, सुगत (सुन्दरगतिको प्राप्त), लोकविद्, पुरुषोंको दमन करने (= सन्मार्ग पर लाने के लिये अनुपम चाबुक सवार, देव-मनुष्योंके शास्ता (= उपदेशक), बुद्ध (-ज्ञानी) भगवान् हैं, उनके पास चलें और धर्म-चर्चा करें।

इस तरह से राजा अजातशत्रु ने अपने मन्त्रियों से अलग अलग विचार जानकर उन्होंने एक-एक कर सभी दार्शनिकों के पास जाने का मन बना लिया था |

1. अजितकेशकम्बल का मत(जड़वाद, उच्छेदवाद)[3]:-

केशकम्बल नाम पडने से मालूम होता है, कि आदमीके केशों का कम्बल पहिननेको, सयुग्वा रैक्व की बैलगाडीकी भांति उसने अपना बाना बना रखा था[4]।कोसलराज प्रसेनजित ने बुद्ध से एक बार कहा था[5]-"हे गौतम ! वह जो श्रमण-ब्राह्मण संघ के अधिपति, गणाधिपति, गणके आचार्य, प्रसिद्ध यशस्वी, तीर्थंकर, बहुत जनों द्वारा सुसम्मत हैं, जैसे---पूर्ण काश्यप, मक्खलि गोशाल, निगंठ नातपुत्त, संजय वेलट्ठिपुत्त, प्रक्रुधकात्यायन, अजित केशकम्बल -- वह भी यह पूछनेपर कि (आपने) अनुपम सच्ची सम्बोधि (=परम ज्ञान) को जान लिया, यह दावा नहीं करने । फिर जन्मसे अल्पवयस्क, और प्रब्रज्या (-संन्यास) मे नये आप गौतम के लिए तो क्या कहना है ?'इसमें जान पड़ता है, कि बुद्ध(५६३-४८३ ई० पू०) से अजित उम्र में ज्यादा था ।

मगधराज अजातशत्रु, वैदेहिपुत्रजहाँ अजित केशकम्बलथे वहां जाकर उनसे पूछा कि[6], "जिस तरह से भिन्न भिन्न शिल्प-स्थान (= विद्या, कला) हैं, जैसे कि हस्ति आरोहण (हाथीकी सवारी), अश्वारोहण, रथिक, धनुग्रह, चेलक (=युद्धध्वज-धारण), चलक (=व्यूह-रचन), पिंडदापिक (=पिंड बाँटनेवाले), उग्र राजपुत्र (=वीर राजपुत्र), महानाग (- हाथीसे युद्ध करनेवाले) शूर, चर्म (= ढाल) -योधी, दासपुत्र,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

आलारिक (= बावर्ची), कल्पक (-हजाम), नहापक (=नहलानेवाले), सूद (=पाचक), मालाकार, रजक, पेशकार (= रंगरेज), नलकार, कुंभकार, गणक, मुद्रिक (हाथसे गिननेवाले), और जो दूसरे भी इस प्रकारके भिन्न भिन्न शिल्प हैं; (इनके) शिल्पफलसे (लोग) इसी शरीरमें प्रत्यक्ष जीविका करते हैं, उससे अपने को सुखी करते हैं, तृप्त करते हैं। पुत्र स्त्रीको सुखी करते हैं, तृप्त करते हैं। मित्र अमात्योंको०। ऊपर ले जानेवाला, स्वर्ग को ले जानेवाला, सुख-विपाक- वाला, स्वर्गमार्गीय, श्रमण ब्राह्मणों के लिये दान, स्थापित करते हैं। क्या उसी प्रकार श्रामण्य (= भिक्षुपन का) फल भी इसी जन्ममें प्रत्यक्ष (फलदायक) बतलाया जा सकता है?"

ऐसा पूछने पर अजित केशकम्बलने उत्तर दिया कि[7], "महाराज ! न दान है, न यज्ञ है न होम है, न पुण्य या पापका अच्छा बुरा फल होता है, न यह लोक है न परलोक है, न माता है, न पिता है, न अयोनिज (= ओपपातिक, देव) सत्व हैं, और न इस लोकमें वैसे ज्ञानी और समर्थ भ्रमण या ब्राह्मण हैं जो इस लोक और परलोकको स्वयं जानकर और साक्षात्कर (कुछ) कहेंगे । मनुष्य चार महाभूतोंसे मिलकर बना है । मनुष्य जब मरता है तब पृथ्वी, महापृथ्वीमें लीन हो जाती है, जल, तेज, वायु और इन्द्रियाँ आकाशमें लीन हो जाती हैं। मनुष्य लोग मरे हुयेको खाटपर रखकर ले जाते हैं, उसकी निन्दा प्रशंसा करते हैं। हड्डियाँ कबूतरकी तरह उजली हो (बिखर) जाती हैं, और सब कुछ भस्म हो जाता है । मूर्ख लोग जो दान देते हैं, उसका कोई फल नहीं होता । आस्तिकवाद (= आत्मा है) झूठा है । मूर्ख और पण्डित सभी शरीरके नष्ट होते हो उच्छेदको प्राप्त हो जाते हैं। मरनेके बाद कोई नहीं रहता"।

इस तरह से जवाब अजित केशकम्बलने राजा अजातशत्रु को दिया । राजा अजातशत्रु के मन में यह विचार आया कि जैसे आमके पूछनेपर कटहल कहे और कटहलके पूछनेपर आम कहे और वे उठकर चले गए ।

2. मक्खलि गोशालका मत (दैववाद)[8]:-

मक्खलि गोशाल का (मस्करी)वर्णन बौद्ध और जैन दोनों पिटकोंमें आता है। जैनपिटकसे पता लगता है, कि वह पहिले जैन मतका साधु था, पीछे उससे निकाला गया तथा मक्खलि गोशालका जो चित्र वहाँ अंकित किया गया है, उससे वह बहुत नीच प्रकृतिका ईर्ष्यालु, धर्मान्ध जान पड़ता है और उसने महाबीर नि .सीकर-जैन)गंठ नातपुतको मारनेकी कोशिश की (, किन्तु इसके विरुद्ध बौद्ध पिटक उसे बुद्धकालीन प्रसिद्ध लोकसम्मानित आचायोंमें एक मानता है; आजीवक सम्प्रदाय के तीन आचायों नन्द वात्स्य- (निर्माताओं), कृश सांकृत्य और मक्खलि गोशालमेंसे एक बतलाता है[9]।बुद्धके बुद्धत्व प्राप्त करनेके समय में पू० ई० ५३७)) आजीवक सम्प्रदाय मौजूद था, क्योंकि बुद्ध गया से चलने पर बोधि और गया के बीच रास्ते उन्हें उपक नामक आजीवक मिला था[10]|

मगधराज अजातशत्रु, वैदेहिपुत्र जहाँ मक्खलि गोसाल था वहाँ गयाऔर जो अजित केशकम्बल को पूछा था वही प्रश्न मक्खलि गोसाल को पूछा और मक्खलि गोसालने जवाब दिया[11], "महाराज ! सत्वोंके क्लेशका हेतु नहीं है— प्रत्यय नहीं है । बिना हेतुके और बिना प्रत्ययके ही सत्व क्लेश पाते हैं । सत्वोंकी शुद्धिक कोई हेतु नहीं है, कोई प्रत्यय नहीं है। बिना हेतुके और बिना प्रत्ययके सत्व शुद्ध होते हैं। अपने कुछ नहीं कर सकते हैं, पराये भी कुछ नहीं कर सकते हैं, (कोई) पुरुष भी कुछ नहीं कर सकता हैं, बल नहीं है, वीर्य नहीं है, पुरुषका कोई पराक्रम नहीं है । सभी सत्व, सभी प्राणी, सभी भूत, और सभी जीव अपने वशमें नहीं हैं, निर्बल, निर्वीर्य, भाग्य और संयोगके फेरसे छँ जातियों (में उत्पन्न हो) सुख और दुःख भोगते हैं । वे प्रमुख योनियाँ चौदह् लाख छियासठ सौ हैं । पाँच सो पाँच कर्म, तोन अर्ध कर्म

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

(=केवल मनसे शरीरसे नहीं), बासठ प्रतिपदायें (= मार्ग), बासठ अन्तरकल्प, छँ अभिजातियाँ, आठ पुरुष-भूमियाँ, उन्नीस सौ आजीवक, उनचास सौ परिब्राजक, उनचास सौ नाग-आवास, बीस सौ इन्द्रियाँ, तीस सौ नरक, छत्तीस रजोधातु, सात संज्ञी (=होशवाले) गर्भ, सात असंज्ञी गर्भ, सात निर्ग्रन्य गर्भ, सात देव, सात मनुष्य, सात पिशाच, सात स्वर, सात सौ सात गाँठ, सात सौ सातं प्रपात, सात सौ सात स्वप्न, और अस्सी लाख छोटे-बडे कल्प हैं, जिन्हें मुर्ख और पण्डित जानकर और अनुगमनकर दुःखोंका अन्त कर सकते हैं। वहाँ यह नहीं है - इस शोल या व्रत या तप, ब्रह्मचर्यसे में अपरिपक्व कर्मको परिपक्व करूँगा ।परिपक्व कर्मको भोगकर अन्त करूँगा । सुख दुःख से द्रोण (नाप) से तुले हुये हैं, संसारमें घटना-बढ़ना उत्कर्ष-अपकर्ष नहीं होता। जैसे की सुतकी गोली फेंकने पर उछलती हुई गिरती है, वैसे ही मुर्ख और पण्डित दौड़कर आवागमन में पड़कर दुःखका अन्त करेंगे"।

प्रत्यक्ष श्रामण्यफलके पूछे जानेपर, मक्खलि गोसालने इस तरह संसारकी शुद्धिका उपाय राजा अजातशत्रु को बताया।

3. पूर्णकाश्यपका मत(अक्रियावाद)[12]:-

मगधराज अजातशत्रु, वैदेहिपुत्र ,जहाँ पूर्ण काश्यप थे, वहाँ गया और वही प्रश्न पूछा तथा पूर्ण काश्यपने जवाब दिया कि[13] - ,'महाराज करते कराते !, छेदन करते, छेदन कराते, पकाते पकवाते, शोक करते, परेशान होते, परेशान कराते, चलते चलाते, प्राण मारते, बिना दिया लेते, सेंध काटते, गाँव लूटते, चोरी करते, बटमारी करते, परस्त्रीगमन करते, झूठ बोलते भी, पाप नहीं किया जाता । छुरेसे तेज चक्रद्वारा जो इस पृथिवी के प्राणियोंका एक माँसका खलियान एक माँसका पुंज बना दे (कोई); तो इसके कारण उसको पाप नहीं, पापका आगम नहीं होगा । यदि घात करते कराते, काटतेकटाते-, पकातेपकवाते-, गंगाके दक्षिण तीर पर भी जाये ; तो भी इसके कारण उसको पाप नहीं, पापका आगम नहीं होगा । दान देते, दानदिलातेयज्ञ कर ,ते , कराते यदि गंगा के उत्तर तीर भी जाये ,तो इसके कारण उसको पुण्य नहीं, पुण्य का आगम नहीं होगा | न पुण्य का आगम है ,सत्य बोलने से न पुण्य है ,दान दम संयम से|

इस तरह का जवाब पूर्ण काश्यपने राजा अजातशत्रु को प्रत्यक्ष श्रामण्यफलके पूछे जानेपरदिया और राजा अजातशत्रु के मन यह विचार आया कि, जैसे आमके पूछनेपर कटहल कहे और कटहलके पूछनेपर आम कहे और वे वहाँ से उठकर चले गए |

4. प्रक्रुध कात्यायनका मत (अकृततावाद)[14]:-

मगधराज अजातशत्रु, वैदेहिपुत्रजहाँ प्रक्रुध कात्यायनथा वहां जाकर वही प्रश्न पूछा और प्रक्रुध कात्यायनने उत्तर दिया[15]- "महाराज! यह सात काय (= समूह) अकृत = अकृतविध = अ- निर्मित = निर्माण - रहित, अबध्य = कूटस्थ, स्तम्भवत् (अचल) हैं । यह चल नहीं होते, विकारको प्राप्त नहीं होते; न एक दूसरेको हानि पहुँचाते हैं; न एक दूसरे के सुख, दुख, या सुख-दुःखके लिये पर्याप्त हैं। कौनसे सात ? पृथिवी काय, आप- काय, तेज-काय, वायु-काय, सुख, दुख, और जीवन यह सात । यह सात काय अकृत • सुख-दुःखके योग्य नहीं हैं । यहाँ न हन्ता (= मारनेवाला) है, न घातयिता (- हनन करानेवाला), न सुननेवाला, न सुनानेवाला, न जाननेवाला न जतलानेवाला । जो तीक्ष्ण शस्त्रसे शीश भी काटे (तोभी) कोई किसीको प्राणसे नहीं मारता । सातों कायोंसे अलग, विवर (= खाली जगह) में शस्त्र (हथियार) गिरता है"।

इस तरह से प्रत्यक्ष श्रामण्यफलके बारें में पूछे जाने पर प्रक्रुध कात्यायनने दूसरी ही इधर उधरकी बातें बनाई और राजा अजातशत्रु को जवाब दिया।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

5. संजयबेलट्ठीपुत्तकामत (अनिश्चिततावाद)[16]: -

मगधराज अजातशत्रु, वैदेहिपुत्रजहाँ संजय बेलट्ठीपुत्त था वहां जाकर वही प्रश्न संजय बेलट्ठिपुत्त को पूछा और संजय बेलट्ठिपुत्तने यह उत्तर दिया[17]- "महाराज! यदि आप पूछे, ''क्या परलोक है ? और यदि मैं समझुं कि परलोक है, तो आपको बतलाऊँ कि परलोक है । मैं ऐसा भी नहीं कहता, मैं वैसा भी नहीं कहता, मैं दूसरी तरहसे भी नहीं कहता, मैं यह भी नहीं कहता कि 'यह नहीं है | परलोक नहीं है | परलोक है भी और नहीं भी । परलोक न है और न नहीं है | अयोनिज (= औपपातिक) प्राणी हैं०, अयोनिज प्राणी नहीं है, है भी और नहीं भी, न है न नहीं है ० | अच्छे -बुरे काम के फल है, नहीं है, है भी और नहीं भी, न है और न नहीं है | मैं यह भी नहीं कहता कि 'यह नहीं नहीं है।' परलोक नहीं है ०। परलोक है भी और नहीं भी, हूँ और न नहीं हैं ? ० । तथागत मरनेके बाद होते हैं नहीं होते हैं ० ?' यदि मुझे ऐसा पूछे, और मैं ऐसा समझुं कि मरनेके बाद तथागत न रहते हैं और न नहीं रहते हैं, तो मैं ऐसा आपको कहूँ। में ऐसा भी नहीं कहता, मै वैसा भी नहीं कहता|

प्रत्यक्ष श्रामण्यफलके पूछने पर संजय वेलट्ठिपुत्तने कोई निश्चित बात नहीं कही। इस तरह का जवाब संजय बेलट्ठिपुत्तने राजा अजातशत्रु को दिया ।

6. निगण्ठनाथपुत्तकामत - (चातुर्यामसंवर)[18]:-

जैन धर्म के संस्थापक वर्धमान ज्ञातपुत्र (=नातपुत्त) बुद्धके समकालीन आचार्यों में थे[19]। तीर्थंकर वर्धमान को जैन लोग वीर या महावीर भी कहते हैं, बौद्ध उनका उल्लेख निगंठ नातपुत्त (= निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र) के नाम से करते हैं[20]।

मगधराज अजातशत्रुवैदेहिपुत्र निगण्ठ नाथपुत्त के पास जाकर उनसे भी वही प्रश्न पूछा और निगण्ठ नाथपुत्तने यह उत्तर दिया[21]- 'महाराज ! निगण्ठ चार (प्रकार- के) संवरोंसे संवृत (= आच्छादित, संयत) रहता है। महाराज ! निगण्ठ चार संवरोंसे कैसे संवृत रहता है ?

(१) निगण्ठ (= निग्रंथ) जलके व्यवहारका वारण करता है (जिसमें जलके जीव न मारे जावें) ।

(२) सभी पापोंका वारण करता है,

(३) सभी पापोंके वारण करनेसे धुतपाप (=पापरहित) होता है,

(४) सभी पापोंके वारण करनेमें लगा रहता है। महाराज! निगण्ठ इस प्रकार चार संवरोंसे संवृत रहता है। महाराज ! क्योंकि निगण्ठ इन चार प्रकारके संवरोंसे संवृत रहता है, इसीलिये वह निर्ग्रन्थ, गतात्मा (= अनिच्छुक), यतात्मा (= संयमी) और स्थितात्मा कहलाता है"।

प्रत्यक्ष श्रामण्य फलके पूछने पर निगण्ठ नाथपुत्तने चार संवरोंका वर्णन किया ।

आखिर में मगधराज अजातशत्रु सिद्धार्थ गौतम बुद्ध के पास उसी प्रश्न का जवाब जानने हेतु चले गए एवं उनसे भी वही प्रश्न (जो उपरोक्त छः दार्शनिकों को पूछा था) पूछा और तथागत बुद्ध ने उदाहरण के साथ राजा अजातशत्रु को निम्नलिखित जवाब दिया[22], "महाराज ! अगरआपका एक नौकर हो जो आपके सारे कामों को करता हो, आपके कहने के पहले ही वह आपके सारे कामोंको कर चुकता हो, आपके सोने या बैठनेके बाद ही स्वयं सोता या बैठता हो, आपकी आज्ञा सुनने के लिये सदा तैयार रहता हो, प्रिय आचरण करने वाला, प्रिय बोलने वाला, और आपकी आज्ञाओं को सुनने के लिये सदा आपके मुँह की ओर ताकता रहता हो। उस (नौकर) के मन में यह हो— 'पुण्य की गति और पुण्य का फल बळा अद्‌भुत और आश्चर्यमय है। यह मगधराज अजातशत्रु वैदेहिपुत्र भी मनुष्य ही हैं और में भी मनुष्य ही हूँ। यह मगधराज० पाँच प्रकारके भोगों (= कामगुणों) का भोग करते हैं, जैसे मानों कोई देव हों, और

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

में उनका नौकर हूँ, तो मै भी पुण्य करूँ, शिर और दाढ़ी मुंडवा, काषाय वस्त्र धारण कर, घर से बेघर हो प्रब्रजित हो जाऊँ।वह उसके बाद शिर और दाढ़ी मुंडा, काषाय वस्त्र धारणकर, घरसे बेघर बन, प्रब्रजित हो जावे। वह इस प्रकार प्रब्रजित हो शरीर से संयम, बचन से संयम और मन से संयम करके विहार करे, तथा खाना कपडा मात्र से संतुष्ट और प्रसन्न रहे। तब क्या आप ऐसा कहेंगे- 'मेरा वह पुरुष लौट आवे और फिर भी मेरा नौकर होवे। राजा अजातशत्रु ने कहा, "भन्ते ! हम ऐसा नहीं कह सकते। बल्कि हम ही उसका अभिवादन करेंगे, उसकी सेवा करेंगे, उसको आसन देंगे और उसे चीवर, पिण्डपात, शयन-आसन और दवा-पथ्य देनेके लिये निमन्त्रण देंगे। उसकी सभी तरहसे देखभाल भी करेंगे।"भिक्षु होना"तो महाराज! क्या समझते हैं, श्रमणभाव (साधु होना) के पालन करनेका (यह) फल यहीं आँखोंके सामने मिल रहा है या नहीं?"राजा अजातशत्रुने जवाब दिया कि,"भन्ते ! हाँ ऐसा होनेपर तो श्रमणभावके पालन करने का फल यहीं आँखोंके सामने मिल रहा है।"

उसी तरह से तथागत बुद्ध ने दूसरा उदाहरण देते हुए राजा अजातशत्रु को कहा कि[23],"आपका कोई आदमी कृषक, गृहपति, कामकाज करनेवाला और धन-धान्य बटोरने वाला हो। उसके मन में ऐसा हो— 'पुण्य की गति और पुण्य का फल बळा आश्चर्यकारक और अद्‌भुत है। यह मगधराज मनुष्य हूँ। यह मगधराज • पाँच भोगोंसे ० जैसे कोई देव और में कृषक ०। सो में भी पुण्य करूँ। शिर और दाढ़ी • प्रब्रजित हो जाऊँ ।"सो दूसरे समय अल्प या अधिक (अपनी) भोगकी सामग्रियोंको छोड, अल्प या अधिक परिवार और जाति के बन्धन को तोड, शिर और दाढ़ी मुंडाकर प्रब्रजित हो जावे। तो आप क्या कहेंगे 'वह मेरा आदमी आवे और फिर भी कृषक होवे?"राजा अजातशत्रुने कहा "नहीं भन्ते ! बल्कि हम ही उसका अभिवादन करेंगे, उसकी सेवा करेंगे, उसको आसन देंगे और उसे चीवर, पिण्डपात, शयन-आसन और दवा-पथ्य देनेके लिये निमन्त्रण देंगे। उसकी सभी तरहसे देखभाल भी करेंगे।"

इस तरह से तथागत बुद्ध ने राजा अजातशत्रु को यह दूसरा श्रमणभाव के पालन करने का फल बताया |

शील:

तथागत बुद्ध ने राजा अजातशत्रु से आगे कहा कि[24], - "महाराज ! जब संसारमें तथागत अर्हत्, सम्यक् सम्बुद्ध, विद्या-आचरणसे युक्त, सुगत (= अच्छी गतिवाले), लोकविद्, अनुत्तर (अलौकिक), पुरुषोंको दमन करने (=सन्मार्ग पर लाने) के लिये अनुपम चाबुक सवार, देव मनुष्योंके शास्ता, (और) बुद्ध (-ज्ञानी) उत्पन्न होते हैं, वह देवताओंके साथ, मारके साथ, ब्रह्माके साथ, श्रमण, ब्राह्मण, प्रजाओंके साथ तथा देवताओं और मनुष्योंके साथ, इस लोकको स्वयं जाने, साक्षात् किये (धर्म) को उपदेश करते हैं। वह आदि-कल्याण, मध्यकल्याण, अन्त्यकल्याण धर्मका उपदेश करते हैं। सार्थक, स्पष्ट, बिलकुल पूर्ण (और) शुद्ध ब्रह्मचर्यको बतलाते हैं। उस धर्मको गृहपति या गृहपतिका पुत्र, या किसी दूसरे कुलमें उत्पन्न हुआ पुरुष सुनता है। वह उस धर्मको सुनकर तथागतके प्रति श्रद्धालु हो जाता है। वह श्रद्धालु होकर ऐसा विचारता है- गृहस्थका जीवन बाघा और रागसे युक्त है और प्रब्रज्या बिल्कुल स्वच्छन्द खुला हुआ स्थान हैं। घरमें रहनेवाला पूरे तौरसे, एकदम परिशुद्ध और खरादे शंखसे निर्मल (इस) ब्रह्मचर्यका पालन नहीं कर सकता। इसलिये क्यों न में शिर और दाढ़ी .... प्रब्रजित हो जाऊँ। वह दूसरे समय अल्प या अधिक भोगकी सामग्रियों.... जातिके बन्धनको तोड प्रब्रजित हो जाता है।वह प्रब्रजित हो प्रातिमोक्षके नियमोंका ठीक ठीक पालन करते हुए विहार करता है, आचार- गोचरके सहित हो, छोटेसे भी पापसे डरनेवाला काय और वचन कर्मसे संयुक्त, शुद्ध जीविका करते, शोलसम्पन, इन्द्रिय-संयमी, भोजनकी मात्रा जाननेवाला, स्मृतिमान्, सावधान और संतुष्ट रहता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

आरम्भिक शील:

(१)भिक्षु हिंसाको छोड हिंसासे विरत होता है, दण्डको छोळ, शस्त्रको छोड, लज्जा (पाप कर्मों) से मुक्त, दयासम्पन्न, सभी प्राणियों के हितकी कामनासे युक्त हो विहार करता है। (२) चोरीको छोड चोरीसे विरत रहता है, किसीकी कुछ दी गई वस्तुहीको ग्रहण करता है, किसीकी कुछ दी गई वस्तुहीकी अभि- लाषा करता है। इस प्रकार वह पवित्रात्मा होकर विहार करता है। (३) अब्रह्मचर्य को छोळ ब्रह्मचारी रहता है, मैथुन कर्मसे विरत और दूर रहता है। (४) मिथ्याभाषण को छोड, मिथ्याभाषणसे विरत रहता है, सत्यवादी, सत्यसन्ध, स्थिर, विश्वसनीय और यथार्थवक्ता होता है। यह भी शील है । (५) चुगली खाना छोळ, चुगलीं खानेसे विरत रहता है, लोगोंमें लढाई लगानेके लिये यहाँसे सुनकर वहाँ नहीं कहता है और वहाँस सुनकर यहाँ नहीं कहता। वह फूटे हुए लोगोंका मिलानेवाला, मिले हुए लोगोंमें और भी अधिक मेल करानेवाला, मेल चाहनेवाला, मेल (के काम) में लगा हुआ, (और) मेलमें प्रसन्न होनेवाला, मेल करनेकी बातका बोलनेवाला होता है। यह भी शील है। (६) कठोर बचनको छोळ कठोर बचनसे विरत रहता है। जो बात निर्दोष, कर्णप्रिय, प्रेमयुक्त, मनमें लगनेवाली, सभ्य, तथा लोगोंको प्रिय है, उसी प्रकारकी बातोंका कहनेवाला होता है। यह भी शील है। (७) व्यर्थके बकवास को छोड व्यर्थके बकवास से विरत रहता है। समयोचित बात बोलनेवाला, ठीक बात बोलनेवाला, सार्थक बात बोलनेवाला, धर्मकी बात बोलनेवाला, विनयकी बात बोलनेवाला, जंचनेवाली बात बोलनेवाला होता है। समय और अवस्थाके अनुकूल विभागकर सार्थक बात बोलनेवाला होता है। यह भी शील हैं। (८) बीजों और जीवोंके नाश करनेको छोड बीजों और जीवोंके नाश करनेसे विरत रहता है । (९) दिनमें एक बार ही भोजन करनेवाला होता है, विकाल (मध्याह्नके बाद) भोजनसे विरत रहता है। (१०) नृत्य, गीत, बाजा, और बुरे प्रदर्शनसे विरत रहता है। (११) ऊँची और सजी-धजी शय्यासे विरत रहता है। (१२) सोने चांदीके छूनेसे विरत रहता है। यह भी शील है। इस तरह से प्रारम्भिक शील के बारें में तथागत बुद्ध ने राजा अजातशत्रु को जानकारी दी |

मध्यमशील:

मध्यम शील के सन्दर्भ में तथागत बुद्ध ने, राजा अजातशत्रु को उदाहरण के साथ कहा कि,जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राह्मण (गृहस्थोंके द्वारा) श्रद्धापूर्वक दिये गये भोजनको खाकर इस प्रकारके सभी बीजों और सभी प्राणियोंके नाशमें लगे रहते हैं, जैसे—मूलबीज (= जिनका उगना मूलसे होता है), स्कन्धबीज (जिनका प्ररोह गाँठसे होता है, जैसे—ईख), फलबीज और पाँचवाँ अग्रबीज (उगता पौधा), उस प्रकार श्रमण गौतम बीजों और प्राणियोंका नाश नहीं करता तथा जिस प्रकार कितने भ्रमण और ब्राह्मण • इस प्रकार अपनेको सजने- भजनमें लगे रहते हैं, जैसे-- उबटन लगवाना, शरीरको मलवाना, दूसरेके हाथ नहाना, शरीर दबवाना, ऐना, अंजन, माला, लेप, मुख-चूर्ण (उडर), मुख-लेपन, हाथके आभूषण, शिखाका आभूषण छळी, तलवार, छाता, सुन्दर जूता, टोपी, मणि, चँवर, लम्बे-लम्बे झालरवाले साफ उजले कपडे इत्यादि, उस प्रकार श्रमण गौतम अपनेको सजने-धजनेमें नहीं लगा रहता और जिस प्रकार कितने भ्रमण और ब्राह्मण० इस प्रकारकी व्यर्थकी (= तिरश्चीन) कथामें लगे रहते हैं, जैसे--- राजकथा, चोर, महामंत्री, सेना, भय, युद्ध, अन्न, पान, वस्त्र, शय्या, माला, गन्ध, जाति, रथ, ग्राम, निगम, नगर, जनपद, स्त्री, शूर, चौरस्ता (= विशिखा), पनघट, -प्रेतकी कथायें, संसारकी विविध घटनाएँ, सामुद्रिक घटनाएँ, तथा इसी तरहकी इधर- उघरकी जनश्रुतियाँ, उस प्रकार श्रमण गौतम तिरश्चीन कथाओंमें नहीं लगता ।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

महाशील:

महाशीलके सन्दर्भ में तथागत बुद्ध ने राजा अजातशत्रु को उदाहरण के साथ कहा कि[25], जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राह्मण श्रद्धापूर्वक दिये गये भोजनको खाकर इस प्रकारकी हीन (=नीच). विद्यासे जीवन बिताते हैं, जैसे--अंगविद्या, उत्पाद०, स्वप्न०, लक्षण०, मूषिक- विष-विद्या, अग्निहवन, दव-होम, तुष-होम, कण-होमें, तण्डुल-होम, घृत-होम, तैल-होम, मुखमें घी लेकर कुल्लेसे होम, रुधिर-होम, वास्तुविद्या, क्षेत्रविद्या, शिव०, भूत०, भूरि०, सर्प ०, विष०, बिच्छूके झाळ-फूंककी विद्या, मूषिक विद्या, पक्षि०, शरपरित्राण (=मन्त्र जाप, जिससे लळाईमें वाण शरीरपर न गिरे), और मृगचक्र; मणि- लक्षण, वस्त्र०, दण्ड०, असि०, वाण०, धनुष०, आयुध०, स्त्री०, पुरुष०, कुमार०, कुमारी०, दास०, दासी०, हस्ति०, अश्व०, भैंस०, वृषभ०, गाय०, अज०, मेष०, मुर्गा०, बत्तक०, गोह०, कर्णिका०, कच्छप० और मृग-लक्षण; जिस प्रकार कितने श्रमण और ब्राह्मण निन्दित जीवन बिताते हैं, जैसे--राजा बाहर निकल जायेगा, नहीं निकल जायेगा, यहाँका राजा बाहर जायगा, बाहरका राजा यहाँ आवेगा, यहाँके राजाकी जीत होगी और बाहरके राजाकी हार, यहाँके राजाकी हार होगी और बाहरके राजाकी जीत, इसकी जीत होगी और उसकी हार, चन्द्र-ग्रहण होगा, सूर्य ग्रहण, नक्षत्र-ग्रहण, चन्द्रमा और सूर्य अपने-अपने मार्ग ही पर रहेंगे, चन्द्रमा और सूर्य अपने मार्गसे दूसरे मार्गपर चले जायेंगे, नक्षत्र अपने मार्गपर रहेगा, नक्षत्र अपने मार्गसे हट जायगा, उल्कापात होगा, दिशा डाह होगा, भूकम्प होगा, सूखा बादल गरजेगा, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्रोंका उदय, अस्त, सदोष होगा और शुद्ध होना होगा, चन्द्र-ग्रहणका यह फल होगा०, चन्द्रमा, सूर्य और नक्षत्रके उदय, अस्त सदोष या निर्दोष होनेसे यह फल होगा, अच्छी वृष्टि होगी, बुरी दृष्टि होगी, सस्ती होगी, महँगी पडेगी, कुशल होगा, भय होगा, रोग होगा, आरोग्य होगा, हस्तरेखा-विद्या, गणना, कविता पाठ, सगाई, विवाह, विवाहके लिए उचित नक्षत्र बताना, तलाक देनेके लिए उचित नक्षत्र बताना, उधार या ऋणमें दिये गये रुपयोंके वसूल करनेके लिए उचित नक्षत्र बताना, उधार या ऋण देनेके लिए उचित नक्षत्र बताना, सजना-धजना, नष्ट करना, गर्भपुष्टि करना, मन्त्रबलसे जीभको बाँध देना, ० ठुड्डीको बाँध देना, ० दूसरेके हाथको उलट देना, दूसरेके कानको बहरा बना देना इस प्रकार से श्रमण गौतम हीन जीवन नहीं जीता |इस तरह से वह भिक्षु इस प्रकार शीलसम्पन्न हो इस शीलसंवरके कारणकहींसे - भय नहीं देखता है।वह इस शीलके पालन करनेसे अपने भीतर निर्दोष सुखकोअनुभव करता है। भिक्षु इस तरह शीलसम्पन्न होता है।

इन्द्रियों का संवर(संयम):

शीलसम्पन्नभिक्षु अपने इन्द्रियोंको वशमें रखता है, जैसे भिक्षु आँखसे रूपको देखकर न उसके आकारको ग्रहण करता है और न आसक्त होता है। जिस चक्षुइन्द्रियका संयम नहीं रखनेसे (मनमें) दोर्मनस्यबुराइयाँ और पाप चले आते हैं; उसकीरक्षा के लिये यत्न करता है । चक्षु इन्द्रियकी (संवर=) रक्षा करता है, चक्षु इन्द्रियकोसंवृत करता है। कानसे शब्द सुनकर । नाकसे गन्ध सूंघकर । जिह्वासे रसका आस्वादन करके० । शरीरसे स्पर्श करके० । मनसे धर्मोंको जान करके अपने भीतर परम सुखको प्राप्त करता है। इस प्रकार भिक्षु अपनी इन्द्रियोंकोवशमें रखता है|

स्मृतिसंप्रजन्य:भिक्षु स्मृतिऔर संप्रजन्य से युक्त होता है (सावधानी=), जैसे, भिक्षु जाने और आनेमें सावधानरहता है। देखने और भालनेमें ० । मोडने और पसारनेमें ० । संघाटी, पात्र और चीवरके धारणकरनेमें ० । खाने, पीने, चलने और सोनेमें ०। पाखाना, पेशाब करनेमें ० । चलते, खळा रहते, बैठते, सोते, जागते, बोलते और चुप रहते और भिक्षु इस प्रकार शरीर ढकनेभर चीवरसे और पेटभर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

भिक्षासे संतुष्टरहता हैवह जहाँ जहाँ जाता है अपना सब कुछ लेकर जाता है। जिस- तरह पक्षी जहाँजहाँ उडता है, अपने पंखोंको लिये ही उडता है, उसी प्रकार भिक्षु संतुष्ट रहताहै।

सन्तोष:

वह भिक्षु इस प्रकार उत्तम शीलों (आर्यशीलस्कंध =), उत्तम इन्द्रियसंवर, उत्तम स्मृतिसंप्रजन्य-, और उत्तम संतोषसे युक्त हो एकान्तमें वास करता है (ऐसे); जैसेकि जंगलमें वृक्ष के नीचे, पर्वत, कन्दरा, गिरिगुहा, श्मशान, जंगलका रास्ता खुले स्थान, पुआलका ढेर । पिण्डपातसे लौटनेके बाद भोजन करनेके उपरान्त, आसनमार, शरीरको सीधाकर, चारों ओरसे स्मृतिमान् हो बाहरकी ओरसे ध्यानको खींच भीतरकी ओरफेरकर विहार करता है।) ध्यान (ऐसे)अभ्यासचित्तको शुद्ध करता (अपने) से वह (है। हिंसाकेभावको छोळ, अहिंसक चित्तवाला होकर विहार करता है। सभी जीवोंके प्रति दयाका भाव वाला होकर -अपने चित्तको हिंसाके भावसे शुद्ध करता है। आलस्यको छोळ बिना आलस्य(लेकर) से य (ख्याल =) विहारकरता है। प्रकाशयुक्त संज्ञाुक्त सावधान हो अपने चित्तको आलस्यसेशुद्ध --करता है। अपनी चंचलता और शंकाओंको छोळ शान्त भावसे रहता है। अपने भीतरकी शान्तिसे संयुक्तचित्तवाला हो, चंचलताओं और शंकाओंसे अपने चित्तको शुद्ध करता है। संदेहोंकोछोळ संदेहोंसे रहित होकर विहार करता है। इस तरह से शुद्ध हुए चित्त से वह भिक्षु ध्यानों को प्राप्त कर विहार करता है |

समाधी:

प्रथम ध्यान:

प्रथम ध्यान में भिक्षुनीवरणों(काम, व्यापाद, स्त्यानमृद्ध, औद्धत्य, विचिकित्सा)को अपनेमें नष्ट देख, प्रमोद उत्पन्नहोता है। प्रमुदित होनेसे प्रीति उत्पन्न होती है (आनन्द), प्रीतिके उत्पन्न होनेसे शरीर शान्तहोता है। शरीरके शान्त रहनेसे उसे है। वह कामों सांसारिकसुख होता है। सुखके उत्पन्न होनेसे चित्त) को छोळ (होताभोगोंकी इच्छा (एकाग्र) समाहित, पापोंकोछोळ सवितर्क-, सविचार-, और विवेकसे उत्पन्न प्रौति सुखवाले प्रथमध्यानको प्राप्त करके विहारकरता है। वह इस शरीरको विवेकसे उत्पन्न प्रीतिसुखसे सींचता है-, -भिगोता है, पूर्णकरता है, और चारों ओर व्याप्त करता है। उसके शरीरका कोई भी भाग विवेकसे उत्पन्न उसप्रीतिसुखसे अव्याप्त नहीं रहता-|

द्वितीय ध्यान:

भिक्षु वितर्क और विचारकेशान्त हो जानेसे भीतरी प्रसाद, चित्तकी एकाग्रतासे युक्त किन्तु वितर्क और विचारसेरहित समाधिसे उत्पन्न प्रीतिसुखवाले दूसरे ध्यानको प्राप्त होकर विहार करता है -|

तृतीय ध्यान:

भिक्षु प्रीति और विरागसे भी उपेक्षायुक्त (=अन्यहो स्मृति और संप्रजन्यसे युक्त हो विहार (मनस्क - करता है। और शरीरसे आर्यों (=पण्डितोंके कहे हुए सभी सुखोंका अनुभव करता है (; और उपेक्षाके साथ, स्मृतिमान् औरसुखविहारवाले तीसरे ध्यान को प्राप्त होकर विहार करता है। वह इसी शरीरको प्रीतिरहितसुखसे सीचता । इसके शरीरका कोई भी भाग प्रीतिरहित सुखसे अव्याप्त नहीं होता|

चतुर्थ ध्यान:

भिक्षु सुखको छोड, दुःखको छोडपहले ही सौमनस्य और दौर्मनस्यके अस्त हो जानसे न दुःख और न-सुखवाले, तथा स्मृति औरउपेक्षासे शुद्ध चौथे ध्यानको प्राप्तकर विहार करता है। सो इसी शरीरको

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

अपने शुद्ध चित्तसेनिर्मल बनाकर बैठता है। उसके शरीरका कोई भाग शुद्ध और निर्मल चित्तसे अव्याप्त नहींहोता। जैसे महाराज कोई पुरुष उजले कप !डे से शिर तक ढाँककर, पहनकर बैठे, (और (उसकेशरीरका कोई भाग उस उजले कपडे से बे! ढँका न हो। यह भी महाराज-प्रत्यक्ष श्रामण्यफल- से बढ़कर है।वह भिक्षु इसप्रकार एकाग्र, शुद्ध, निर्मल, निष्पाप, क्लेशोंसे रहित, मृदु, मनोरम, और निश्चल चित्तपानेके बाद सच्चे ज्ञानके प्रत्यक्ष करनेके लिये अपने चित्तको नवाता है। वह इस प्रकारजानता है - 'यह मेरा शरीर, भौतिक पृथ्वी =) चार महाभूतों (रूपी =), जल, तेज और वायुसे बना, माता और पिताके संयोगसे उत्पन्न, भात दालसे बद्धित, अनित्य, छेदन, भेदन, मर्दन, और नाशन योग्य । यह (है) इसमें लग जाता है और बंध जाता है। भिक्षु एकाग्र (मन) मेरा विज्ञान, शुद्ध चित्तको लगाता है। वह ऐसाजानता है, 'यह मेरा शरीर भौतिक नाशनयोग्य है। और मेरा यह विज्ञान यहाँ लग गया है, फँसगया है। यह भी महाराज प्रत्यक्ष श्रामण्यफल- से बढ़कर है, वह भिक्षु इस प्रकारके एकाग्र, शुद्ध चित्त, पानेके बाद मनोमय शरीरके निर्माण करनेकेलिये अपने चित्तको लगाता है। वह इस शरीरसे अलग एक दूसरे भौतिक, मनोमय, सभी अङ्गप्रत्यङगोंसेयुक्त, अच्छी पुष्ट इन्द्रियोंवाले शरीरका निर्माण करता है।"जैसे महाराज—पुरुष तलवारको म्यानसे निकाले। उसके मनमेंऐसा हो (कोई) !'यह तलवार है और यह म्यान। तलवार दूसरी है और म्यान दूसरा। तलवार म्यान हीसेनिकाली गई है।यह भी महाराजप्रत्यक्ष . श्रामण्य फलसे बढ़कर है ।

ऋद्धियां:

वह भिक्षु इस प्रकारकेएकाग्र, शुद्ध चित्तको पाकर अनेक प्रकारको ऋद्धियोंकी प्राप्तिके लिये चित्तको लगाताहै। वह अनेक प्रकारकी ऋद्धियोंको प्राप्त करता हैएक होकर बहुत होता है—, बहुत होकरएक होता है, प्रगट होता है, अन्तर्धान होता है, दीवारके आरपार, औरपर्वतके आरपार बिना टकराये चला जाता है, मानो आकाशमें । पृथिवीमें जलमेंजैसा गोते लगाता है (जा रहा हो), जलके तलपर भी पृथिवीके तलपर जैसा चलता है। आकाशमें भी पलथी मारेहुये उडता है, मानो पक्षी उ)ड रहा हो(; महातेजस्वी - सूरज और चाँदको भी हाथसे छूता है, और मलता है; ब्रह्मलोक तक अपने शरीरसे वशमें किये रहता है ।यह भी महाराज प्रत्यक्ष श्रामण्य फल से बढ़कर हैं[26]।

दिव्य श्रोत्र:

वह भिक्षु इस प्रकार एकाग्र शुद्ध चित्तको पाकर दिव्य श्रोत्रधातुके पानेके लिये अपनेचित्तको लगाता है; और वह अपने अलौकिक शुद्ध दिव्य, श्रोत्र शब्द सुनता है(प्रकारके) से दोनों (कान), देवताओंके भी और मनुष्योंके भी, दूरके भी और निकटके भी। महाराज फल-यहभी प्रत्यक्ष श्रामण्य ! से बढ़कर है ।

परचित्तज्ञान:

वहभिक्षु इस प्रकार एकाग्र, शुद्ध० चित्तको पाकर दूसरेके चित्तकी बातोंको जाननेके लिये अपनाचित्त लगाता है। वह दूसरे सत्वोंके, दूसरे लोगोके चित्तको अपने चित्तसे जान लेता हैरागसहितचित्तको -- रागसहित जान लेता है, वैराग्यसहित चित्त०, द्वेषसहित चित्त०, द्वेपसे रहितचित्त०, मोहसहित चित्तः, मोहसे रहित०, संकीर्ण चित्त०, विक्षिप्त चित्त०, उदार चित्त०, अनुदार चित्त०, सांसारिक (साधारण=) चित्त०, अलौकिक अस)ाधारणचित्त (, एकाग्र चित्त, न एकाग्र०, विमुक्त चित्त ०, अ चित्त (बद्ध=) मुक्त- ०(को वैसाही जान लेता है(| यह भी महाराज प्रत्यक्ष श्रामण्य फल !से बढ़कर है ।

पूर्वजन्मों का स्मरण:

वह भिक्षु इस प्रकार एकाग्र चित्तको पाकर पूर्व जन्मोंकी बातोंको स्मरण करनेके •लिये अपने चित्तको

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

लगाता है। सो नाना पूर्व जन्मोंकी बातोंको स्मरण करता है । जैसे, एक जाति, दो, तीन, चार, पाँच, दस ०, बीस ०, तीस ०, चालीस ०, पचास ०, सौ " हजार०, लाख ०, अनेक संवर्त कल्पों (प्रलय), अनेक विवर्त कल्पों (सृष्टि), अनेक संवर्तको जानत) विवर्तकल्पों-ा है (– वहां था (मैं), इस नाम वाला, इस गोत्र वाला, इस रंगका, इस आहार (भोजनको खाने वाला इतनी आयु वाला था। मैंने इस प्रकारके सुख और (वहाँसे मरकर वहाँ उत्पन्न हुआ (मैं) दुःखका अनुभव किया।सो, इस नाम वाला ०। सो वहाँ मरकर (मैं) यहाँ उत्पन्नहुआ" इस तरह आकार प्रकारके साथ वह अनेक पूर्व जन्मोंको स्मरण करता है।यह भीमहाराज प्रत्यक्ष श्रामण्य फल ! से बढ़कर है ।

दिव्यचक्षु:

वह भिक्षु इस प्रकार एकाग्र चित्तको पाकर प्राणियोंकेजन्म मरण में जाननेके लिये अपने (के विषय) चित्तको लगाता है। वह शुद्ध और अलौकिक दिव्यचक्षुसे मरते उत्पन्न होते; हीन अवस्थामें आये, अच्छी अवस्थामें आये; अच्छे वर्ण (= रंगवाले (, बुरे वर्ण वाले; अच्छी गतिको प्राप्त, बुरी गतिको प्राप्त, अपने अपनेकर्मके अनुसार अवस्थाको प्राप्त, प्राणियों को जान लेता हैये प्राणी शरीरसे दुराचरण-, वचनसे दुराचरण, और मनसे दुराचरण करते हुये, साधुपुरुषोंकी निन्दा करते थे, मिथ्या दृष्टि (बुरे सिद्धान्त (रखते थे, बुरी धारणा वह मरनेकेबाद नरक (अब) के काम करते थे । (मिथ्यादृष्टि =), और दुर्गतिको प्राप्त हुये हैं। और यह प्राणी शरीर(दूसरे), वचनऔर मनसे सदाचार करते, साधुजनोंकी प्रशंसा करते, ठीक धारणा वाले (सम्यक् दृष्टि), सम्यक्दृष्टिके अनुकूल आचरण करते थे; सो अब अच्छी गति और स्वर्गको प्राप्त हुये हैं। इस तरहशुद्ध अलौकिक दिव्य चक्षुसे ० जान लेता है।.यह भीमहाराज प्रत्यक्ष ! श्रामण्य फल से बढ़कर है ।

दुःखक्षय ज्ञान:

वह भिक्षु इस प्रकार एकाग्र चित्तको पाकर आस्रवों (= चित्तमलों०। जाननेके लिये (विषयमें) के क्षयके (वह'यह दुःख है' इसको भली भांतिजान लेता है, 'यह दुःख० है (दुःखका कारण =) समुदय -', 'यह दुखहैं(दुःखका नाश =) निरोध-'०, 'यह दुःखोंसे बचनेका मार्ग है'० जान लेता है। 'यह आस्रव है' ०, 'यह आस्रवोंकासमुदय हैं'०, 'यह आस्रवोंका निरोध है ०, 'यह आस्रवोंके निरोधका मार्ग है '०। ऐसा जाननेऔर देखनेसे कामास्रव' से उसका चित्त मुक्त हो जाता है, भवआस्रवसे, अविद्या आस्रवसे।-'जन्म खतम हो गया, ब्रह्मचर्य पूरा हो गया, करना था सो कर लिया, अब यहाँके लिये करनेकोनहीं रहा ऐसा जान लेता है।"महाराजफलसे बढ़कर कोई दूसरा प्रत्यक्षश्रामण्य फल नहीं है।-इस प्रत्यक्ष श्रामण्य !" तथागत बुद्ध के ऐसा कहनेपर मगधराज अजातशत्रुने भगवान् बुद्ध सेकहा-"आश्चर्य भन्ते! अद्भुत भन्ते ! जैसे उलटेको सीधा करदे, जैसे ढँकेको खोल दे, जैसे भार्ग भूलेको मार्ग बता दे, जैसेअन्धकारमें तेलका दीपक दिखादे; जिसमें कि आँखवाले रूपको देखें; उसी तरहसे भन्ते भगवान ! बुद्ध ने अनेक प्रकारसे धर्मको प्रकाशित किया । भन्ते यह !मै भगवान शरणमें जाता हूँ, धर्मकीऔर भिक्षु संघकी भी। आजसे याबज्जीवन भगवान बुद्ध मुझे अपनी शरणमें आया उपासक स्वीकार करें"[27]।

समीक्षात्मक अध्ययन:

अजित केशकम्बल मनुष्य को चातुर्महाभौतिक (चारो भूतों से बना) मानता था । आयुर्वेद में मनुष्य को पञ्च महाभूतों से बना हुआ मानते है | बौद्ध दर्शन में भी चार महाभूत माने जाते है |अजित केशकम्बल के विचारों से ऐसा प्रतीत होता है कि, वहभौतिकवादी था |

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

मक्खलि मोशालनेसात स्वर और सात सौ सात स्वप्न के सन्दर्भ में कहा है | आयुर्वेद में भी स्वर, स्वप्न के बारें में वर्णन आया है जैसे, चरक संहिता इन्द्रियस्थानमके प्रथम अध्याय वर्णस्वरीयमिन्द्रियं में स्वर के सन्दर्भ में निम्नलिखित कहा गया है[28]–

स्वराधिकारस्तु - हंस-क्रौञ्च-नेमि दुन्दुभि कलविङ्क - काक- कपोत- झर्झरानुकाराः प्रकृतिस्वरा भवन्ति, याश्चापरानुपेक्षमाणोऽपि विद्यादनूक- तोऽन्यथा वाऽपि निर्दिश्यमानस्तिज्ज्ञैः ॥ च.इं. अ.1/ १४ ॥

स्वराधिकार मनुष्यों का जो स्वर रस, क्रौञ्च, नेमि, दुन्दुभि, कलविङ्क- आदि के स्वर और कौवा, कबूतर इनक स्वर के समान हो, उसको प्राकृतिक स्वर समझना चाहिये । इनके अतिरिक्त इन स्वरों के समान जो प्रकृति स्वर यहा पर नहीं कहे गये और देखने में आवें या सादृश्य से या जिनको तत्त्वज्ञानी लोग बतलावें उनको भी जाने || १४ ||

एडक कल-प्रस्ताव्यक्त-गद्गद-क्षाम दीनानुकीर्णास्त्वातुराणां स्वरा वैकारिका भवन्ति । यश्चापरानुपेक्षमाणोऽपि विद्यात्प्रा विकृतानभूत्वो- त्पन्नान् । इति प्रकृतिविकृतिस्वरा व्याख्याताः ॥ १५ ॥
वैकृतिक स्वर - रोगी का स्वर एडक (मेडा) के समान, भे भे की सी आवाज़ हो, अस्पष्ट, गद्गद (भरा हुआ), क्षाम (निर्बल), दीन (दुःख से बोला जाने वाला), कल (सूक्ष्म), ग्रस्त (निगली सी आवाज, मुख से शब्द न निकले), रोगियों के इस प्रकार के शब्द विकृति के होते हैं। इसी प्रकार जो स्वर प्राकृतिक स्वर से विपरीत अथवा नये प्रकार के देखने में आवें जो पहिले कभी न उत्पन्न हुए हों, उनको भी वैकृतिक स्वर समझे । इस प्रकार से प्राकृतिक और वैकृतिक स्वरो का वर्णन कर दिया || १५ ||
स्वप्न के सन्दर्भ में चरक संहिता इन्द्रियस्थानमके पांचवे अध्याय 'पूर्वरूपीय इन्द्रिय' में स्वप्न के सात प्रकार एवं उनके कारणों को बताया गया हैं, जैसे[29]-

दृष्टं श्रतानुभूतं च प्रार्थित कल्पितं तथा ।
भाविक दोषजं चैव स्वप्न सप्तविध विदु ॥ च.इं. अ.५/४३ ॥

स्वप्न के भेद - स्वप्न सात प्रकार के हैं। जैसे - (१) दृष्ट, आख से देखा, (२) श्रुत, कान से सुना, (३) अनुभूत, शेष इन्द्रियों से जाना, (४) मार्थित, देवता से भागा या चाहा हुआ (५) कल्पित, मन से कल्पना किया, (६) भाविक, भावी शुभ अशुभ फल का सूचक, (७) दोषज, तीव्र वात आदि दोष से उत्पन्न ये सात प्रकार के स्वप्न हैं ॥ ४३ ॥

मनोवहानां पूर्णत्वाद्दोषैरतिबलैखिभिः ।
स्रोतसा दारुणान् स्वप्नान् काले पश्यति दारुणे ॥ च.इं. अ.५/४१ ॥
नातिप्रसुप्तः पुरुषः सफलानफलानपि ।
इन्द्रियेशेन मनसा स्वप्नान् पश्यत्यनेकधा ॥ च.इं. अ.५/४२ ॥

स्वप्न दर्शन का कारण जिस समय कुपित हुए तीनों बात आदि दोषशरीर के मनोवह स्रोतों को भर

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

देते हैं, उस समय मनुष्य को शुभ याअशुभ स्वप्नों का दर्शन होता हैजिस समय मनुष्य पूर्णगहरी नींद में नहींहोता है, उस समय सफल या निष्फल होने वाले अनेक स्वप्नों को इन्द्रियों के स्वामी चित्र के द्वारा देखा करता है || ४१-४२ ॥

मक्खलि मोशाल ने सात देव, सात मनुष्य, सात पिशाच के बारें में कहा है | आयुर्वेद में भी पिशाच के सन्दर्भ में सुश्रुतसंहिता उत्तरतन्त्रम में (सांठ)षष्टित 'अमानुषोपसर्गप्रतिषेध'अध्याय में वर्णन आया है जैसे[30]-अशुचिं भिन्नमर्यादं क्षतं वा यदि वाऽक्षतम् । हिंस्युहिंसाविहारार्थं सत्कारार्थमथापि वा ॥ सु.उ.अ.६०/५ ॥

ग्रह किसे और क्यों ग्रस्त करते हैं— अशुचिम् अर्थात् जो व्यक्ति अस्वच्छ रहता है, जो गम्यागम्य मर्यादाओं का पालन नहीं करता है, जो क्षतयुक्त अथवा क्षतरहित होने पर भी स्वच्छ नहीं रहता है उस व्यक्ति को ग्रह हिंसा, विहार या पूजा प्राप्त करने की दृष्टि से ग्रस्त करते हैं ॥ सु.उ.अ.६०/५ ॥

पिशाचजुष्ट के लक्षण– (उदहस्तः = ऊर्ध्वबाहुः) अर्थात् जिसने हाथ ऊपर को उठा रखे हों (पाठान्तर—उद्वस्त्रः = नग्नः, जो नंगा रहता हो), दुर्बल, कर्कश (कठोर स्वभाव वाला), चिरकाल तक प्रलाप करने वाला, जिसके शरीर से दुर्गन्ध आती हो, अति गन्दा रहने वाला, अधिक लालची ('सर्वस्मिन् शीतल रात्रि जिसे अच्छी लगती हो, उद्विग्न रहने वाला तथा जो रोता हुआ घूमता रहता है, ऐसे व्यक्ति अन्ने पाने च स तृष्ण:), अधिक भोजन करने वाला, सुनसान जगह पसन्द करने वाला, शीतल जल एवं को पिशाचजुष्ट समझना चाहिए ।। सु.उ.अ.६०/१५ ।।

'अमानुषोपसर्गप्रतिषेध' का अर्थ इस प्रकार किया गया है— ' अमानुषाः देवादिग्रहाः, तेषामुपसर्गः उपद्रवः, तस्य प्रतिषेधः = चिकित्सितम् ' (ड.) ।

'अमानुषी क्रिया' या 'मनुष्यैः कर्तुं न शक्यते ' (ड.) ।

अष्टांग आयुर्वेद में एक अंग भूतविद्या के वर्णन के लिए है।

आचार्य चरक के मत से (नि. ७) हिंसा, रति और अर्चना इन तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ग्रहावेश होता है। इनमें हिंसार्थ हुई ग्रहजुष्टता असाध्य है (च.चि. ९।२९) तथा रत्युन्मादित एवं अर्चनोन्मादित औषध द्वारा चिकित्सा करनी चाहिए[31]।

मक्खलि मोशाल के विचारों से लगता है कि वह भाग्यवादी था; पुनर्जन्म और देवताओं को मानता था |

पूर्णकाश्यप ने कहा है कि, दान, दम, संयम से, सत्य बोलने से न पुण्य है, न पुण्य का आगम है |

प्रक्रुध कात्यायन ने सात प्रकार के काय माने है |

संजय बेलट्ठिपुत्त के विचारों से लगता है कि,वह अनिश्चिततावादी मत का था, परलोक मानता भी था और नहीं भी मानता था |

निगंठ नातपुत्त (महावीर)का शारीरिक कर्मपर जोर थातथा शारीरिक दुःख ही पाप को दूर करने और कैवल्यसुख प्राप्त करनेका साधन है, इस तरह का वर्धमानका विश्वास था । तप, संयम वर्धमान महावीर की मुख्य शिक्षाहै |शारीरिक तपस्या, मरणान्न अनशन, नंगे बदन रह शीत-उष्णको सहना आदि बातें जैन आगमोंमें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। ऐसी मान्यता है कि, जैन साधुओं की तपस्या और निगंठ नातपुत्त (महावीर) सर्वज्ञ सर्वदर्शी होते हैं।

जैन दर्शनका आधार 'स्यादवाद' है और ऐसा प्रतीत होता है कि, संजय बेलट्ठपुत्तके चार अंगवाले अनेकान्तवाद को लेकर उसे सात अंगवाला किया गया है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

संजय बेलट्ठपुत्त ने तत्वों (=परलोक, देवता) के बारेमें कुछ भी निश्चयात्मक रूप से कहने से इन्कार करते हुए उस इन्कार को चार प्रकार कहा है[32]-

(१)है?नहीं कह सकता

(२) नहीं है?नही कह सकता ।

(३) है भी और नहीं भी?नही कह सकता।

(४) न है और न नही है?नही कह सकता ।

इसकी तुलना जैनों केसात प्रकारके स्याद्वादसे--

(१) है? - हो सकता है (स्याद् अस्ति)

(२) नही है?नही भी हो सकता है । (स्याद् नास्ति)

(३) है भी और नही भी?है भी और नहीं भी हो सकता है(स्यादस्ति च नास्ति च)

उक्त तीनो उत्तर क्या कहे जा सकते (=वक्तव्य है?) इसका उत्तर जैन 'नही' मे देते हैं---

(४) 'स्याद' (हो सकता है) क्या यह कहा जा सकता (=वक्तव्य)है?नहीं, स्याद् अ-वक्तव्य है ।

(५) 'स्याद् अस्ति' क्या यह वक्तव्य है?नहीं, 'स्याद् अस्ति'अवक्तव्य है ।

(६) 'स्याद नास्ति' क्या यह वक्तव्य है?नही, 'स्याद् नास्ति' अवक्तव्य है ।

(७) 'स्याद् अस्ति च नास्ति च क्या यह वक्तव्य है?नही, 'स्याद् अस्ति च नास्ति च' अ-वक्तव्य है।

दोनों के मिलानेसे मालूम होगा कि जैनों ने संजय के पहिलेवाले तीन वाक्यों (प्रश्न और उत्तर दोनों) को अलग करके अपने स्याद्वादकीछै भंगियाँ बनाई है, और उसके चौथे वाक्य "न है और न नहीं है" को छोड़कर, 'स्याद्' भी वक्तब्य है यह सातवा भंग तैयार कर अपनी सप्तभंगी पूरी की[33]।

उपरोक्त जानकारी से स्पष्ट हो जाता है कि. मगधराज अजातशत्रु के प्रश्न का अनुरूप जवाब भगवान् बुद्ध ने बहुत ही विस्तार से उदाहरण के साथ दिया और कहा कि,श्रमणभाव के पालन करने का फल तुरन्त ही मिलना शुरू हो जाता है|

निष्कर्ष:

बुद्ध के समय के प्रसिद्ध छ: दार्शनिक अजित केशकम्बल, मक्खलि गोशाल, पूर्णकाश्यप, प्रक्रुधकात्यायन, संजय वेलट्ठिपुत्त, निगंठ नातपुत्तइनका उस काल के सभ्य समाजमे बहुत मान-सन्मान था|

मक्खलि मोशाल ने बासठ प्रतिपदायें (= मार्ग), बासठ अन्तरकल्प, छँ अभिजातियाँ, आठ पुरुष-भूमियाँ, उन्नीस सौ आजीवक, उनचास सौ परिब्राजक, उनचास सौ नाग-आवास, बीस सौ इन्द्रियाँ, तीस सौ नरक, छत्तीस रजोधातु, सात संज्ञी (=होशवाले) गर्भ, सात असंज्ञी गर्भ, सात निर्ग्रन्य गर्भ, सात स्वर, सात सौ सात गाँठ, सात सौ सातं प्रपात, सात सौ सात स्वप्न, और अस्सी लाख छोटे-बडे कल्प हैं इत्यादि माने है| बौद्ध और जैन त्रिपिटक साहित्य उपलब्ध है परन्तु अन्य पांच (बुद्ध के समय के) दार्शनिकों के मूल विस्तृत साहित्य के बारें में जानकारी नहीं है और शायद वह भी मूल रूप में उपलब्ध होता तो आधुनिक दार्शनिकों के परिप्रेक्ष्य में उनके विचार प्रकाश में आते और यकीं के साथ कहा सकते थे कि, किनका किस पर प्रभाव है?

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

कृतज्ञता: मैं, आदरणीय महानिदेशक,उपमहानिदेशक,केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसन्धान परिषद,नई दिल्ली, डॉ. कृष्ण कुमार सिंह, प्रभारी सहायक निदेशक, क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान, पटना, इनके प्रति हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और उनके मार्गदर्शन और सहाय्यता के लिए आभार व्यक्त करता हूँ ।

सम्पर्क:
डॉ.बालाजी पोटभरे,
अनुसन्धान अधिकारी (आयु.),
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसन्धान संस्थान,
केंद्रीय आयुर्वेदिय विज्ञान अनुसंधान परिषद के तहत,
आयुष मन्त्रालय, भारत सरकार,
पटना |
Email: balaji_potbhare@yahoo.co.in
balaji.potbhare@gov.in

सन्दर्भ:

1. डॉ.ब्रह्मानंद त्रिपाठी,(2013),चरकसंहिता भाग1,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी,पृष्ठ, 6 |
2. राहुल सांकृत्यायन, (2016), दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 376 |
3. भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, (2010), सुत्तपिटक का दीघ-निकाय, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, पृष्ठ,20|
4. राहुल सांकृत्यायन, (2016), दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 376 |
5. वही, पृष्ठ, 376 |
6. भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, (2010), सुत्तपिटक का दीघ-निकाय, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, पृष्ठ,19|
7. वही, पृष्ठ, 21|
8. वही, पृष्ठ,20|
9. राहुल सांकृत्यायन, (2016), दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 378 |
10. वही, पृष्ठ, 378 |
11. भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, (2010), सुत्तपिटक का दीघ-निकाय, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, पृष्ठ,20|
12. वही, पृष्ठ, 19|
13. वही, पृष्ठ, 19|
14. वही, पृष्ठ, 21|
15. वही, पृष्ठ, 21 |
16. वही, पृष्ठ, 22 |
17. वही, पृष्ठ, 22 |
18. वही, पृष्ठ, 21 |
19. राहुल सांकृत्यायन, (2016), दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 381 |

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 01, (January-March 2023)

20. वही, पृष्ठ, 381 |
21. भिक्षु राहुल सांकृत्यायन एवं भिक्षु जगदीश काश्यप, (2010), सुत्तपिटक का दीघ-निकाय, गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली, पृष्ठ,22।
22. वही, पृष्ठ, 22 ।
23. वही, पृष्ठ, 23।
24. वही, पृष्ठ, 24।
25. वही, पृष्ठ, 25-27।
26. वही, पृष्ठ, 28-32।
27. वही, पृष्ठ, 33।
28. कविराज अत्रिदेवजी गुप्त,(2000),चरक संहिता,(द्वितीय खण्ड), भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस, पृष्ठ, 140 |
29. वही, पृष्ठ, 158।
30. आचार्य प्रियव्रत शर्मा, (2020), सुश्रुतसंहिता,(भाग-3),चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृष्ठ,488-489।
31. वही, पृष्ठ, 487।
32. राहुल सांकृत्यायन, (2016), दर्शन दिग्दर्शन, किताब महल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ, 384 |
33. वही, पृष्ठ, 385 |